1978 My Vows

In Veer Vani

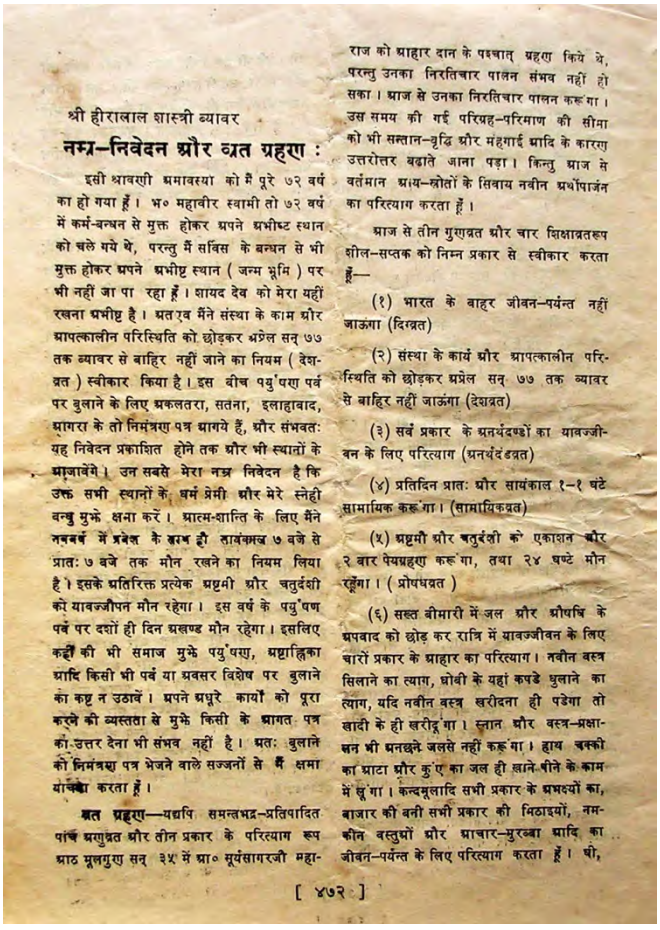

श्री हीरालाल शास्त्री ब्यावर

नम्र–निवेदन श्रौर व्रत ग्रहण :

इसी श्रावणी ग्रमावस्या को मैं पूरे ७२ वर्ष का हो गया हूँ। भ० महावीर स्वामी तो ७२ वर्ष में कर्म-बन्धन से मुक्त होकर ग्रपने ग्रभीष्ट स्थान को चले गये थे, परन्तु मैं सर्विस के बन्धन से भी मुक्त होकर ग्रपने ग्रभीष्ट स्थान (जन्म भूमि) पर भी नहीं जा पा रहा हूँ। शायद देव को मेरा यहीं रखना ग्रभीष्ट है। ग्रतएव मैंने संस्था के काम ग्रौर ग्रापत्कालीन परिस्थिति को छोड़कर ग्रप्रेल सन् ७७ तक ब्यावर से बाहिर नहीं जाने का नियम (देश-व्रत) स्वीकार किया है। इस बीच पर्युषण पर्व पर बुलाने के लिए ग्रकलतरा, सतना, इलाहाबाद, ग्रागरा के तो निमंत्रण पत्र ग्रागये हैं, ग्रौर संभवतः यह निवेदन प्रकाशित होने तक ग्रौर भी स्थानों के ग्राजावेंगे। उन सबसे मेरा नम्र निवेदन है कि उक्त सभी स्थानों के धर्म प्रेमी ग्रौर मेरे स्नेही बन्धु मुझे क्षमा करें। ग्रात्म-शान्ति के लिए मैंने नववर्ष में प्रवेश के साथ ही सायंकाल ७ बजे से प्रातः ७ बजे तक मौन रखने का नियम लिया है। इसके ग्रतिरिक्त प्रत्येक ग्रष्टमी ग्रौर चतुर्दशी को यावज्जीवन मौन रहेगा। इस वर्ष के पर्युषण पर्व पर दशों ही दिन ग्रखण्ड मौन रहेगा। इसलिए कहीं की भी समाज मुझे पर्युषण, ग्रष्टाह्निका ग्रादि किसी भी पर्व या ग्रवसर विशेष पर बुलाने का कष्ट न उठावें। ग्रपने ग्रधूरे कार्यों को पूरा करने की व्यस्तता से मुझे किसी के ग्रागत पत्र का उत्तर देना भी संभव नहीं है। ग्रतः बुलाने को निमंत्रण पत्र भेजने वाले सज्जनों से मैं क्षमा याचना करता हूँ।

व्रत ग्रहण—यद्यपि समन्तभद्र–प्रतिपादित पांच ग्रणुव्रत ग्रौर तीन प्रकार के परित्याग रूप ग्राठ मूलगुण सन् ३५ में ग्रा० सूर्यसागरजी महाराज को ग्राहार दान के पश्चात् ग्रहण किये थे, परन्तु उनका निरतिचार पालन संभव नहीं हो सका। ग्राज से उनका निरतिचार पालन करूंगा। उस समय की गई परिग्रह–परिमाण की सीमा को भी सन्तान–वृद्धि ग्रौर मंहगाई ग्रादि के कारण उत्तरोत्तर बढाते जाना पड़ा। किन्तु ग्राज से वर्तमान ग्राय–स्रोतों के सिवाय नवीन ग्रर्थोपार्जन का परित्याग करता हूँ।

ग्राज से तीन गुणव्रत ग्रौर चार शिक्षाव्रतरूप शील–सप्तक को निम्न प्रकार से स्वीकार करता हूँ—

(१) भारत के बाहर जीवन–पर्यन्त नहीं जाऊंगा (दिग्व्रत)

(२) संस्था के कार्य ग्रौर ग्रापत्कालीन परिस्थिति को छोड़कर ग्रप्रेल सन् ७७ तक ब्यावर से बाहिर नहीं जाऊंगा (देशव्रत)

(३) सर्व प्रकार के ग्रनर्थदण्डों का यावज्जीवन के लिए परित्याग (ग्रनर्थदंडव्रत)

(४) प्रतिदिन प्रातः ग्रौर सायंकाल १–१ घंटे सामायिक करूंगा। (सामायिकव्रत)

(५) ग्रष्टमी ग्रौर चतुर्दशी को एकाशन ग्रौर २ बार पेयग्रहण करूंगा, तथा २४ घण्टे मौन रहूँगा। (प्रोषधव्रत)

(६) सख्त बीमारी में जल ग्रौर ग्रौषधि के ग्रपवाद को छोड़ कर रात्रि में यावज्जीवन के लिए चारों प्रकार के ग्राहार का परित्याग। नवीन वस्त्र सिलाने का त्याग, धोबी के यहां कपडे धुलाने का त्याग, यदि नवीन वस्त्र खरीदना ही पडेगा तो खादी के ही खरीदूंगा। स्नान ग्रौर वस्त्र–प्रक्षालन भी ग्रनछने जलसे नहीं करूंगा। हाथ चक्की का ग्राटा ग्रौर कुंए का जल ही खाने-पीने के काम में लूंगा। कन्दमूलादि सभी प्रकार के ग्रभक्ष्यों का, बाजार की बनी सभी प्रकार की मिठाइयों, नमकीन वस्तुग्रों ग्रौर ग्राचार–मुरब्बा ग्रादि का जीवन–पर्यन्त के लिए परित्याग करता हूँ। घी,

दूध भी विश्वस्त व्यक्ति के यहां का काम में लूंगा। (भोगोपभोग परिमाण)

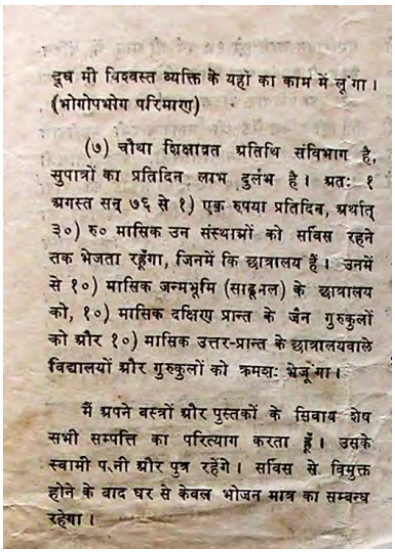

(७) चौथा शिक्षाव्रत ग्रतिथि संविभाग है, सुपात्रों का प्रतिदिन लाभ दुर्लभ है। ग्रतः १ ग्रगस्त सन् ७६ से १) एक रुपया प्रतिदिन, ग्रर्थात् ३०) रु० मासिक उन संस्थाग्रों को सर्विस रहने तक भेजता रहूँगा, जिनमें कि छात्रालय हैं। उनमें से १०) मासिक जन्मभूमि (साढूमल) के छात्रालय को, १०) मासिक दक्षिण प्रान्त के जैन गुरुकुलों को ग्रौर १०) मासिक उत्तर-प्रान्त के छात्रालयवाले विद्यालयों ग्रौर गुरुकुलों को क्रमशः भेजूंगा।

मैं ग्रपने वस्त्रों ग्रौर पुस्तकों के सिवाय शेष सभी सम्पत्ति का परित्याग करता हूँ। उसके स्वामी पत्नी ग्रौर पुत्र रहेंगे। सर्विस से विमुक्त होने के बाद घर से केवल भोजन मात्र का सम्बन्ध रहेगा।